डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांकः 1 अक्टूबर 2009 मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - सातवां | अंक-छठा | अक्टूबर-2009 | मासिक पत्रिका

5
अमृत वेला
(भजन पर बैठने से पहले हिदायतें)
16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

8
दो-शब्द
(सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से)
सन्तबानी आश्रम, अमेरिका

9
सवाल-जवाब
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

15
भक्ति
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग -परम सन्त अजायब सिंह जी
पौटर वैली

30
प्रेम-विरह
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन
16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोनः 0 99 50 55 66 71 व 0 94 14 4 8 03 03
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोनः 099 28 92 53 04
उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग** : रेणु सचदेवा, रोज़ी आनन्द व परमजीत सिंह

91

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

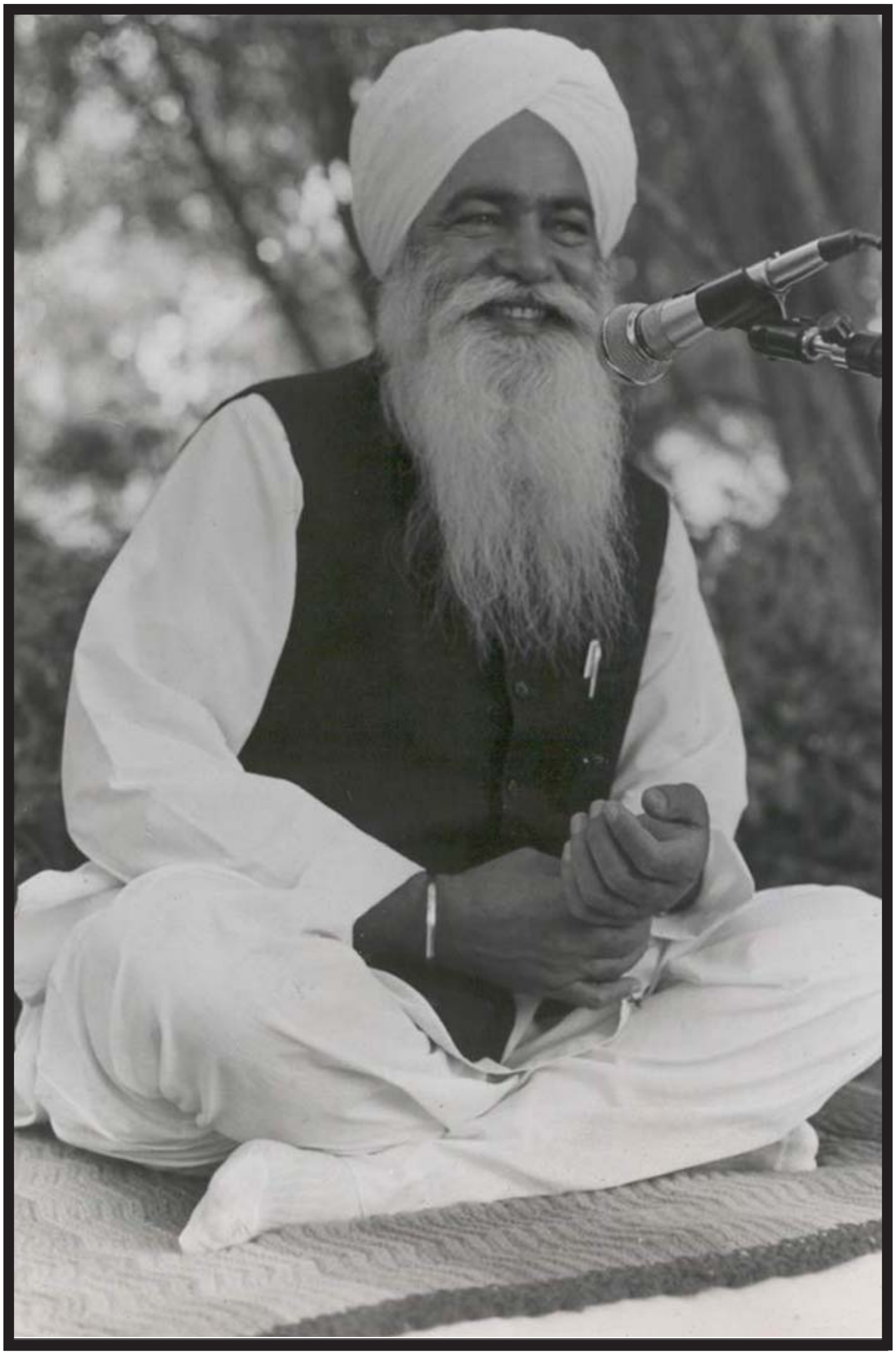

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन पर बिठाने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

अमृत वेला

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया, भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका भी दिया है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जो लोग सन्तों के पास आकर सन्तों को परेशान करते हुए कहते हैं कि दया करें, दया करें; ऐसे लोग भजन के चोर हैं। वे खुद परेशान होते हैं और सन्तों को भी परेशान करते हैं। जो लोग भजन करते हैं सच्चे दिल से परमात्मा को याद करते हैं वह उनकी पुकार जरूर सुनता है चाहे वे लाखों मील दूर सात समुद्र पार क्यों न बैठे हों!

पहले हम कहानियाँ पढ़ा करते थे कि जब परमात्मा के भक्त परमात्मा को पुकारते हैं तो वह हमेशा रहमत करता है। अब हमारे जातिय तजुर्बे में आया है कि हम जो साँस-ग्रास परमात्मा की याद में लगाते हैं वे पल लेखे में हैं अनमोल हैं। परमात्मा रहमत का समुद्र है हमेशा रहमत करता है। कोई ऐसा पल नहीं जब उसकी रहमत न हो अगर उसकी रहमत बन्द हो जाए तो उसे रहमान कौन कहेगा अगर वह दया न करे तो उसे दयावान कौन कहेगा अगर हम उसकी महिमा का अन्त पा सकते तो उसे बेअन्त कौन कहेगा?

ये सब सिफतें मेरे पूर्ण गुरु सावन-कृपाल में थी जिन्होंने इस स्वप्न को साकार किया। बचपन से मेरे दिल में यह तड़प थी कि हे परमात्मा! अगर इस समय आप किसी पोल पर काम कर रहे हैं जैसे पहले आप कबीर, नानक और दस गुरुओं के स्वरूप में आए थे क्या मेरी आँखें भी उसी तरह आपको चलते-फिरते हुए को देख सकेंगी? मेरी सच्ची तड़प देखकर रहम का समुद्र उछला।

आप जानते हैं कि जब समुद्र उछलता है तो उसमें से मोती, हीरे, सीपियां और छोटे-छोटे पत्थरों के टुकड़े भी आते हैं लेकिन यह हमारे चुनने पर निर्भर है कि हम किस चीज के ग्राहक हैं?

अगर हमारे ऊँचे भाग्य हों तो हम हीरा-'नाम' के ग्राहक बनें। परमात्मा हमारे अंदर बैठा सब कुछ देख रहा है कि हमारे अंदर किस तरह की तड़प है? मुझे परमात्मा सावन के चरणों में बैठने का मौका मिला है। जिन्होंने वह नजारा देखा है कि आप बच्चों में बच्चे, जवानों में जवान, और बूढ़ो में बूढ़े थे।

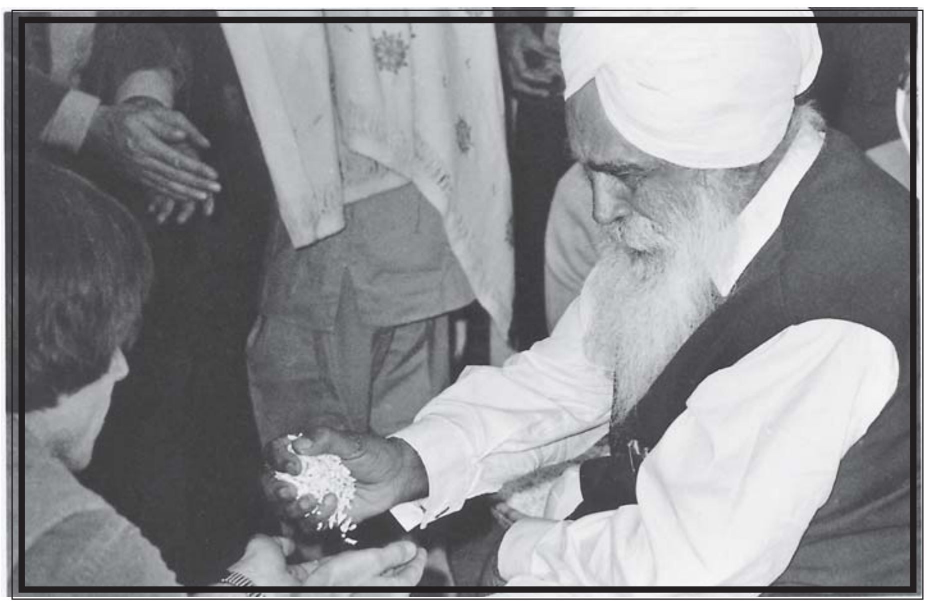

जब परमात्मा कृपाल करणपुर आए तो संगत के कुछ प्रेमियों ने मुझसे विनती की कि महाराज सावन संगत को खुद टोकरी में से रोटियां दिया करते थे क्या महाराज कृपाल हमें उसी रूप में रोटियां देंगे? मैंने कहा, ''विनती करना मेरा फर्ज है मेरा दिल मानता है कि आप हमारी पुकार सुनेंगे।'' मैंने महाराज कृपाल से जाकर कहा कि

संगत के जिन प्रेमियों ने महाराज सावन को रोटियां बाँटते हुए देखा है वे प्रार्थना कर रहे हैं कि आप उसी रूप में उन्हें फुल्का वरताएं।

महाराज कृपाल ने हँसकर मुझसे कहा, ''लंगर में से टोकरी उठाकर ले आ।'' मैं टोकरी उठाकर ले आया। मुझे खुशी है कि जिन्होंने सावन के समय का वह नजारा देखा था उनमें से कोई यह नहीं कह सका कि सावन या कृपाल अलग थे। आप उसे सावन कह लें! कृपाल कह लें! राम कह लें! कृष्ण कह लें! नानक कह लें! कबीर कह लें!

वही कबीर वही सतनामा सब सन्तन को वही पछान।

फर्क इतना होता है पहले के सन्त मालिक के प्यारे भक्ति करके भक्ति रूप हो गए, परमात्मा में मिलकर परमात्मा रूप हो गए। अब वे हमें शब्द-धुन के साथ नहीं जोड़ सकते। इसलिए सन्त कहते हैंः

वक्त गुरु को खोज तेरे भले की कहूं।

वक्त का गुरु, वक्त का डॉक्टर और वक्त का मेजिस्ट्रेट ही हमें फायदा पहुँचा सकता है। यह वह जगह है जहां परमात्मा कृपाल ने अपने मुबारक पवित्र चरण रखे थे। इन चरणों को देवी-देवता भी लोचते हैं। हमारे ऊँचे भाग्य हैं कि आज हम उनकी याद में बैठे हैं।

अभ्यास को कभी बोझ न समझे, प्रेम प्यार से करें। अभ्यास पर बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह याद कर लें। हमारे अंदर दुनिया की जो लहरें उठ रही हैं उन्हें शान्त करें। मन को जवाब देकर अभ्यास में बैठें अगर हम इस तरह से हर रोज अभ्यास में बैठेंगे तो थोड़े से दिनों में ही कामयाब हो जाएंगे।

सन्त यह नहीं चाहते कि वे अपने शिष्यों को अभ्यास में फँसाए। सन्त कहते हैं अगर आप प्रेम-प्यार से थोड़े दिन अभ्यास करेंगे तो अपनी तरक्की रोज-रोज देखेंगे। आप आँखें बंद करके प्रेम-प्यार से अपना अभ्यास शुरू करें। ❁❁❁

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखार विन्द से

दो शब्द

सन्त बानी आश्रम अमेरिका

मैं आप सबसे मिलकर बहुत खुश हूँ। मैं आप सबका स्वागत करता हूँ क्योंकि आप मुझे सुनने के लिए आए हैं। इस स्कूल में पढ़कर बच्चे आगे सुख की जिंदगी व्यतीत कर सकते हैं।

सन्त इस संसार में एक टीचर की हैसियत से आते हैं। जिस तरह टीचर बच्चों को स्कूल में पढ़ाते हैं इसी तरह सन्त भी अपने सतसंग में सबको पढ़ाते हैं कि यह काम आपके फायदे का है। जो लोग सन्तों के कहे मुताबिक अपना जीवन ढ़ाल लेते हैं वही सुखी है।

बच्चा यह नहीं जानता कि पढ़ाई भविष्य में मेरे काम आएगी। मैं पढ़कर अपनी जिंदगी सुख से व्यतीत कर सकूंगा। बच्चा इस मामले में बिल्कुल अंजान है उसे यह ज्ञान नहीं कि यह मेरे फायदे की चीज है। सबसे पहले बच्चे के टीचर उसके माता-पिता हैं अगर माता-पिता बच्चे को समझाएं कि बेटा! तेरे लिए स्कूल जाना बहुत जरूरी है और स्कूल में जाकर अनुशासन में रहना है। टीचर के कहे मुताबिक पढ़ाई करनी है और अपने टीचर की इज्जत करनी है।

बच्चा स्कूल में सहमा-सहमा जाता है वह नहीं जानता कि यह मेरे फायदे में है अगर माता-पिता घर में बच्चे को स्कूल के बारे में कुछ ज्ञान दें तो बच्चे के लिए बहुत अच्छा है। ऐसा करके माता-पिता अपने बच्चे के ऊपर रहम कर रहे होंगे।

बच्चे संसार का आने वाला धन होते हैं। इन बच्चों में से ही किसी ने नेता, मंत्री, राजा या फौज के जनरल बनकर मुल्क की बागडोर संभालनी है।

सवाल जवाब

एक प्रेमीः *महाराज जी! कोलम्बिया में जब व्यक्ति अठारह साल का हो जाता है तो उसे देश की सेवा के लिए आर्मी में बुलाया जाता है। कुछ सालों में मैं और मेरे सतसंगी साथी आर्मी में बुलाए जाएंगे। वहाँ खाने में मीट भी होता है अगर हमें आर्मी में जाना पड़ा तो हमें क्या करना चाहिए?*

बाबा जीः हाँ भाई! केवल कोलम्बिया में ही नहीं और भी बहुत से मुल्कों में अठारह साल के बाद देश सेवा के लिए आर्मी में बुलाया जाता है। मैं भी आर्मी में रहा हूँ। मेरा जातिय तजुर्बा है जहाँ चाह है वहाँ राह निकल आती है अगर हमें परमात्मा पर भरोसा है हम मजबूत हैं तो वहाँ शाकाहारी खाने का इंतजाम हो जाता है। आर्मी में जबरदस्ती मीट नहीं खिलाया जाता, हुक्म मानने की आदत जरूर डाली जाती है। देश सेवा कूट-कूटकर भरी जाती है कि अपने देश के साथ प्यार होना चाहिए। अनुशासन में रहना बहुत जरूरी है।

आर्मी में राशन उतने ही पैसों का आता है जो मीट खाता है, शराब, सिगरेट पीता है उसके लिए उतने पैसों का सामान आ जाता है। वहाँ पूछा जाता है कि आपको कैसा खाना खाना है? जैसा वह खाना चाहता है वैसा ही लंगर में तैयार हो जाता है। वैष्णव के लिए वैष्णव सामान आ जाता है। हमें आर्मी के बारे में कोई सही जानकारी नहीं देता। आमतौर पर जो लोग मीट-शराब को अच्छा समझते हैं उन्हें अपने दोस्तों से यह कहने का बहाना मिल जाता है कि आर्मी में मीट-शराब खाना पड़ता है।

एक बार मैं पंजाब से बस में आ रहा था, पक्का सहारणा में शराब के ठेके थे। जब शराब के ठेके बदलते हैं तो वे लोग एक-दो

दिन के लिए शराब सस्ती कर देते हैं। वहाँ स्पीकर लगा हुआ था कि आज शराब सस्ती मिल रही है लूट लो। उसी बस के अंदर एक परिवार बैठा था जो पाखंडी साधु को मानते थे उन्हें विश्वास था कि ऐसे साधु भूत इत्यादि निकाल देते हैं। ऐसे साधु तम्बाकू, शराब, मीट सब कुछ ही खाते-पीते हैं। ऐसे पाखंडियों ने ही दुनिया में ये चीज़ें प्रचलित की होती है। एक आदमी उतरकर नीचे गया और वहाँ से शराब की बारह बोतलें ले आया। उसने दूसरे आदमी से कहा कि शराब सस्ती मिल रही है और आज मौके से बाबे भी आए हुए हैं। दूसरा आदमी भी जाकर वहाँ से बहुत सी बोतलें ले आया।

उसी बस में एक बुजुर्ग औरत बैठी थी। औरत ने उस आदमी से कहा, ''भाई! तेरी शक्ल शरीफ इंसानों जैसी है, तू यह क्या काम कर रहा है?'' उस आदमी ने कहा, ''माता! मैं पहले आर्मी में था वहाँ खाना-पीना पड़ता है।'' मैं पास में ही बैठा था। मुझे भी करन्ट आ गया क्योंकि मैं भी आर्मी में रह चुका था। मैंने कहा, ''अफसोस की बात है आर्मी में तो ऐसा कोई कानून ही नहीं है जैसा कोई खाना चाहे उसे वैसा ही खाना मिलता है लेकिन हर आदमी अपना-अपना पंथ बढ़ाने के लिए ऐसा कहता है।''

मैंने उससे पूछा कि तू किस आर्मी में था? उसने मुझे बताया कि वह जालन्धर में पाँच-छह दिन आर्मी में रहा। मैंने उसे बताया कि मैं भी आर्मी में रहा हूँ। मैं असम, बर्मा, मलाया, इटली, जावा, सुमात्रा में गया लेकिन मैंने ऐसा कहीं नहीं देखा कि जहाँ मीट-शराब खाना-पीना पड़ता है। जो मेरे साथ फौज में इतने साल रहे हैं उनसे भी पूछ सकते हैं कि मैंने कभी शराब पी हो। वे आदमी मुझे दूर से देख लें तो मेरे पैरों पर माथा टेकते हैं और मानते हैं कि यह आदमी कुछ था।

मैं सन् 1942 में स्पोर्टस खेलने के लिए इंग्लैंड गया था। उस समय सुनने में आता था कि पानी वाले जहाज में सफर करना बहुत

मुश्किल है। जहाज के ऊपर की छत पर चारों तरफ पानी देखकर दिल डोल जाता है फिर शराब ही दिल को ढ़ाढ़स देती है लेकिन जब हम जहाज की छत पर पी.टी के लिए गए तो चारों तरफ पानी देखकर हमारा दिल नहीं घबराया। सच्चाई तो यह है कि शराब पीने वालों का मीट खाने वालों का दिल इतना मजबूत नहीं होता; उनमें इतनी ताकत नहीं होती जितनी शाकाहारी खाना खाने वालों में होती है।

शाकाहारी जानवरों में भी ज्यादा ताकत और अनुशासन होता है। शेर मीट खाता है वह ज्यादा देर तक नहीं लड़ सकता, हाथी शाकाहारी जानवर है वह ज्यादा देर तक लड़ सकता है। जिस तरह लोग आर्मी की सही जानकारी नहीं देते इसी तरह जो खुद खाकर खुश होते हैं वे बाहर भी ऐसा ही प्रचार करते हैं।

हिन्दुस्तान के कई लोग यूरोप, अमेरिका या कनाडा जाकर वहाँ मीट, शराब खाते हैं। उनमें से बहुत से लोगों के परिवार यहाँ शाकाहारी होते हैं लेकिन वापिस आकर जब वे शराब-मीट खाते-पीते हैं तो उन्हें देखकर उनके बच्चे भी ऐसा ही बर्ताव करते हैं। तब वे अपने बच्चों से कहते हैं कि तुम्हारे लिए यह सब खाना-पीना ठीक नहीं लेकिन अपने लिए यही कहते हैं कि बाहर के देशों में तो खाना-पीना पड़ता है क्योंकि वहाँ शाकाहारी भोजन मिलता ही नहीं।

जब शुरू-शुरू में राजस्थान में पश्चिमी प्रेमी आने लगे तो यहाँ कोई यह मानने के लिए तैयार ही नहीं था कि ये लोग शाकाहारी हैं। यहाँ के लोगों की सोच यह थी कि वहाँ तो शाकाहारी भोजन मिलता ही नहीं। मैंने तो कई ऐसे भरोसे वाले सतसंगी देखे हैं जो ऐसी जगह खाना खाना भी पसंद नहीं करते जहाँ किसी ने मीट खाया हो या शराब पी हो।

एक प्रश्नः *हमारे खाने से आपके ऊपर क्या असर पड़ता है? जब हम किसी ऐसी जगह खाना खाते हैं जो शुद्ध शाकाहारी नहीं है*

तो उस जगह खाना खाने से आपकी सेहत पर क्या असर पड़ता है?

बाबा जी: मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ जिससे आपको यह समझना आसान हो जाएगा। राबिया बसरी एक बड़ी मशहूर महात्मा हुई है वह मालिक के साथ मिली हुई थी। वह एक दिन थकावट के कारण सुबह अमृत-वेले में अभ्यास में नहीं बैठ सकी, मालिक से नहीं जुड़ सकी। उसके प्रेमियों को वह मरी हुई नजर आई तो वे सब प्रेमी रोते-चिल्लाते हुए उसके घर की तरफ आए। जिन्हें गुरु का विछोड़ा लगता है वे ही जानते हैं कि यह कितना गहरा घाव है।

प्रेमियों ने जब राबिया बसरी को बैठे हुए देखा तो वे बहुत हैरान हुए। सबने अपना-अपना स्वप्न बताया तो राबिया बसरी ने बुरा नहीं मनाया बल्कि कहा, ''हाँ यह सच है। मैं आज अभ्यास में नहीं बैठ सकी परमात्मा से नहीं जुड़ सकी। मैं जीते जी मरी हुई थी; आपने जो कुछ भी देखा वह ठीक है।''

महाराज सावन सिंह जी हमेशा कहा करते थे, ''काल किसी को माफ नहीं करता। हम जो भी कर्म करते हैं वह हमें भोगना पड़ता है चाहे शिष्य भोगे चाहे गुरु भोगे। रत्ती-रत्ती का हिसाब होता है अगर हम खाने पर कंट्रोल नहीं रखेंगे, बुरे खाने खाएंगे तो बुरा कर्म बनता है और सतसंगी का अभ्यास नहीं बनेगा।''

सतगुरु ने अपने सेवक की जिम्मेवारी उठाई होती है इसलिए उसका बोझ सतगुरु पर आता है अगर सतसंगी को मामूली सा काँटा भी चुभ जाए! वह सारी रात गुरु का ध्यान करता है। वह अपने कर्म कैसे भोग लेगा? हम एक पेड़ लगाते हैं वह पेड़ फल देता है। हम जिसके आगे पुकार कर रहे है क्या वह बेइंसाफ है? इसलिए सन्त-सतगुरु मुनासिब मदद जरूर करता है।

मेरे पास ऐसे अनेकों पत्र और तारें आती हैं इंटरव्यू में भी प्रेमी बताते हैं कि गुरु किस तरह उनकी मदद करता है। महाराज

सावन सिंह जी महाराज कृपाल सिंह जी को संसार छोड़े हुए काफी समय हो गया है लेकिन आज भी प्रेमी इस बात की अगुवाही देते हैं कि वे हमारी संभाल कर रहे हैं।

सन्त-सतगुरु को हमारा बोझ उठाना पड़ता है। सतसंगी जब भी कोई गलती करता है तो काल सन्तों को दिखाता है कि देख! तूने इस आदमी को 'नाम' दिया है, यह क्या कर्म कर रहा है? लेकिन सन्त दयालु होते हैं। दयाल के राज्य में दया है, काल के राज्य में न्याय है। सतगुरु फिर भी कहते हैं कि मैं इसे समझाऊँगा यह ठीक हो जाएगा।

सतसंगी को मजबूत रहना चाहिए। सतसंगी का दिल फौलाद की तरह मजबूत होना चाहिए। सतसंगी को खान-पान की तरफ खास तवज्जो देनी चाहिए। महाराज जी कहा करते थे, ''सतसंगी को ऐसा नहीं होना चाहिए कि गंगा गए तो गंगाराम, जमुना गए तो जमुनाराम अगर चार आदमी मीट-शराब वाले मिल जाए तो उनके साथ वैसे बन गए अगर चार आदमी शाकाहारी मिल जाए तो उनके साथ वैसे बन गए, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। हमें 'नामदान' के समय जीवन बनाने की शिक्षा मिली है उस पर दृढ़ विश्वास से चलना चाहिए।''

महाराज सावन सिंह जी अपने एक अच्छे सतसंगी के बारे में बताया करते थे कि जब उसका अन्त समय आया वह बीमार हो गया घरवालों ने डॉक्टर को बुलवाया। डॉक्टर ने कहा, ''इसे शराब पिलाएं, अण्डे खिलाएं जिससे इसकी नाड़ी की गति-विधि तेज हो जाएगी।'' उस समय उसकी सुरत लगी हुई थी, महाराज सावन आए हुए थे। घरवालों ने बिना पूछे ही उसके मुँह में वह सब कुछ डाल दिया।

महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''तेरे मुँह में शराब और अण्डे डाल दिए हैं अब तू चार दिन और तड़प जब तू साफ हो जाएगा तुझे ले जाएंगे।'' वह जब होश में आया तो उसने घरवालों से पूछा कि मेरे मुँह में क्या डाला था? उन्होंने कहा जो डॉक्टर ने कहा था हमने

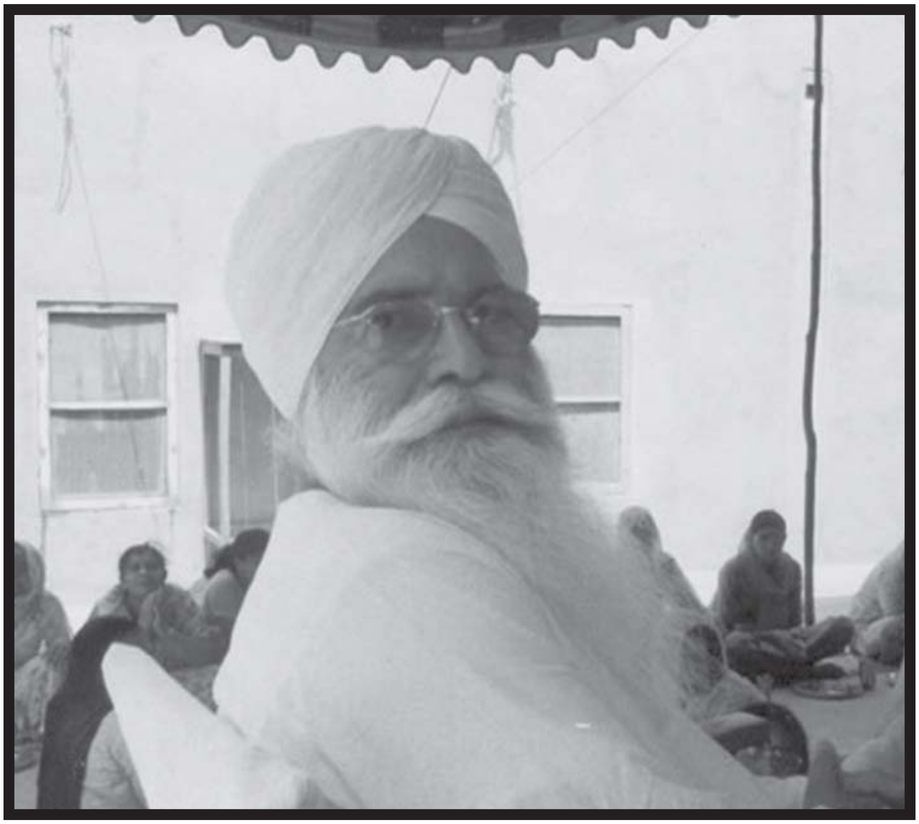

वही किया। उसने कहा कि महाराज जी अंदर आए हुए थे वह चले गए हैं अब फिर चार दिन के बाद आएंगे। उसने अपनी घरवाली से कहा, ''तू मेरी अर्धांगिनी है, आखिरी समय में तू मेरी सेवा कर। दरवाजे पर बैठ जा मैं जब तक संसार न छोड़ जाऊं किसी डॉक्टर को अंदर मत आने देना।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अण्डे, मीट और शराब हमारी जिंदगी को नहीं बचा सकते। सतसंगी के खाने-पीने का उसके मन पर बहुत असर पड़ता है; मन का असर तन पर पड़ता है।''

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भक्ति

स्वामी जी महाराज की बानी | *पौटर वैली*

यह तन दुर्लभ तुमने पाया। कोटि जन्म भटका जब खाया।।
अब या को बिरथा मत खोवो। चेतो छिन छिन भक्ति कमावो।।

यह बानी श्री हुजूर स्वामी जी महाराज की है। आप बड़े प्यार से समझाते हैं कि इंसान का जामा करोड़ो साल बाद बहुत मुश्किल से मिला है। यह भी नहीं कह सकते कि मन और आत्मा कब से इस संसार मंडल में आए हैं; पता नहीं कितनी योनियों में फिरे! पता नहीं आत्मा इन माया के मंडलों में कब से उतरी हुई है; आज तक इन्होंने कितने माता-पिता और कितने बच्चे बनाए?

सच्चखंड से आए सन्त-महात्मा हमें समझाते हैं कि इंसान का जामा बहुत कीमती है। प्रभु ने हमें यह जामा अपने मिलाप का मौका दिया है अगर हमने इसे शराबों-कबाबों में खो दिया तो पता नहीं फिर यह मौका हाथ आए या न आए? गुरु नानक साहब कहते हैंः

लख चौरासी भ्रम तयां मानुख जन्म पाया ओए।
नानक नाम संभाल तू सोधन नेड़े आया ओए।

कबीर साहब कहते हैंः

मानस जन्म दुर्लभ है होत न बारम्बार।
ज्यों वन फल पके भुएं गिरे बोहर न लग्गे डार।

अब सवाल पैदा होता है कि हम इस जामें से किस तरह फायदा उठा सकते हैं? स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हमें इस जामें में **भक्ति** करनी चाहिए, भक्ति की दात प्राप्त करनी चाहिए; परमात्मा ने भक्ति करने के लिए ही हमें इंसान का जामा दिया है।

भक्ति करो तो गुरु की करना। मारग शब्द गुरु से लेना।।

सन्त-महात्माओं की बानियों में शक की कोई गुंजाईश नहीं होती। आप कहते हैं, ''हमने इस जन्म में **भक्ति** करनी है। अब सवाल पैदा होता है कि हमने परमात्मा को देखा नहीं किसकी भक्ति करें? अगर कोई पूरा सतगुरु मिल जाए उससे 'शब्द' का भेद मिल जाए! वह जो रास्ता बताता है वही सेवक के लिए जप-तप और पूजा-पाठ है वही **भक्ति** है।''

शब्द मारगी गुरु न होवे। तो झूठी गुरुवाई लेवे।।
गुरु सोई जो शब्द सनेही। शब्द बिना दूसर नहिं सेई।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमने शब्द स्वरूपी, शब्द अभ्यासी गुरु के पास जाना है। जो महात्मा शब्द-स्वरूपी, शब्द-अभ्यासी नहीं वह झूठा गुरु है उसके पास जाने से हमारा फायदा नहीं होता।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पूरे गुरु कहीं-कहीं हैं दुकानें तो बेशुमार है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं कि ऐसा जमाना आएगा शिष्य बनने के लिए कोई तैयार नहीं होगा सब यही कहेंगे कि हम ही गुरु बनें।

आप महात्मा की जिंदगी पढ़कर देखें! कि महात्मा ने जिंदगी में दस-बीस साल एकान्त में लगाएं हैं, कभी भजन-अभ्यास किया है; अपनी जिंदगी को सन्तों के कहने के मुताबिक साँचे में ढ़ाला है! कबीर साहब, मौलाना रूम, शम्स तबरेज और गुरु नानक देव जी जैसे महात्मा संसार में आए। इसी तरह हमारे सतगुरु स्वामी जी महाराज जिनकी हम बानी पढ़ते हैं आपने 17 साल एक अंधेरी कोठरी में बैठकर अभ्यास किया। बाबा जयमल सिंह ने बहुत जबरदस्त अभ्यास किया, महाराज सावन-कृपाल ने बहुत अभ्यास किया। वे लोगों को तभी डेमोंस्ट्रेशन दे सकेंगे अगर उन्होंने खुद कुछ किया होगा!

शब्द कहा मैं गगन शिखर का। शब्द कहा मैं सुन्न शहर का।।
शब्द कहा मैं भँवर डगर का। शब्द कहा मैं अगम नगर का।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं गाने-बजाने वाले को 'शब्द' नहीं कहता। मैं उस 'शब्द' की महिमा करता हूँ जो 'शब्द' गुरु देता है। वह 'शब्द' सच्चखंड से उठकर हम सबके माथे के पीछे धुनकारे दे रहा है। वहाँ कौम, मजहब और पढ़े-लिखे का सवाल नहीं। जब हम अपने ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाकर ब्रह्म में पहुँच जाते हैं वहाँ हमें ऊपर खींचने वाला 'शब्द' सुनाई देता है।

गुरु पहिचान खूब मैं गाई। धोखा या में कुछ न रहाई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं आपको गुरु की पहचान बता रहा हूँ कि गुरु सच्चखंड जाता है, अपने सेवकों को भी सच्चखंड ले जाता है। गुरु जीव को परमात्मा के आगे खड़ा करके बख्शवा देता है कि यह तेरा जीव है, भूल बख्शवाने आया है। यही गुरु की महिमा है।

शब्द कमावे सो गुरु पूरा। उन चरनन की होजा धूरा।।
और पहिचान करो मत कोई। लक्ष अलक्ष न देखो सोई।।

आप कहते हैं कि हमें पूर्ण महात्मा की पहचान करने की जरूरत नहीं कि यह किस जाति, किस मुल्क और किस धर्म का है। हमने उसकी कमाई देखनी है कि क्या इसने कमाई की है, क्या यह 'शब्द-नाम' की कमाई कर रहा है?

शब्द भेद लेकर तुम उनसे। शब्द कमाओ तुम तन मन से।।

आप कहते हैं कि डाक्टर से दवाई लाकर अलमारी में रखकर डाक्टर को भला-बुरा कहना जायज नहीं। डाक्टर से दवाई लाकर दवाई खानी है और डाक्टर के कहे मुताबिक परहेज भी करना है। इसी तरह सन्तों से 'नाम' लेकर नाम की कमाई करना हर सेवक

का पहला काम है। सन्त परहेज बताते हैं कि विषय-विकारों से बचकर अपनी जिंदगी को पवित्र रखें जोकि बहुत जरूरी है। हमारे अमेरिकन प्रेमियों को यह नहीं पता कि कमाई करना और जिदंगी को पवित्र रखना क्यों जरूरी है।

आप देखें! जिन लोगों ने विज्ञान में तरक्की की है उन्होंने कितनी मेहनत की तब जाकर कामयाब हुए। हिन्दुस्तान में सन्त-सतगुरुओं, ऋषियों-मुनियों ने कड़ी मेहनत की, पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़ें मालिक के साथ विसाल किया।

अपने जीव की कुछ दया पालो। चौरासी का फेर बचा लो।।
नहिं नर्कन में अति दुख पइहो। अग्नि कुंड में छिन छिन दहिहो।।

सन्त-महात्मा बताते हैं, ''**भक्ति** करना, 'नाम' जपना किसी के ऊपर एहसान नहीं यह तो हम अपने ऊपर दया कर रहे हैं। जो अपने ऊपर दया नहीं करता उस पर और कौन दया करेगा? जो अपने ऊपर दया करता है उस पर परमात्मा भी दया करता है।''

मैं आम सतसंगों में कहा करता हूँ, ''सन्तों ने कोई आर्मी नहीं खड़ी करनी होती। सन्त हमेशा प्रेमी की तलाश में होते हैं, हजारों डाँवाडोल शिष्यों से एक मजबूत शिष्य ही काफी होता है।'' आप हमारे ऊपर दया करके हमें समझाते हैं कि अपने ऊपर दया करें, भजन करें अपनी जिंदगी को पवित्र बनाएं।

जब राजा जनक स्थूल शरीर को छोड़कर अपने धाम जाने लगे उस समय नर्कों में जीव कुरला रहे थे। राजा जनक ने धर्मराज के दूतों से पूछा, ''ये जीव क्यों कुरला रहे हैं?'' दूतों ने कहा, ''इन लोगों ने इंसानी जामें में 'नाम' की कमाई नहीं की, अपने जीवन को पवित्र नहीं किया इन लोगों के लिए नर्क बने है और इन्हें कष्ट दिए जा रहे हैं।'' राजा जनक ने दूतों से पूछा, ''क्या तुम इन्हें छोड़ सकते

हो?'' दूतों ने कहा अगर कोई इन्हें अपनी भजन-बंदगी का फल दे तो इन्हें छोड़ा जा सकता है। वहाँ राजा जनक ने ढ़ाई घड़ियों का सिमरन दिया वे जीव आजाद होकर मातलोक में आए और उन्हें मनुष्य का जन्म मिला।

धन धन राजा जनक है जिन सिमरन किया विवेक।
एक घड़ी के सिमरने पापी तरे अनेक।

राजा जनक योगिश्वर था लेकिन सन्त इससे भी ऊपर से आते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैंः

ऐसा सिमरन जान के सन्तों ने पकड़ी टेक।
नानक सिमरन सार है बिसरे घड़ी न एक।

सन्तों का सिमरन सार-शब्द है, सन्तों का रास्ता सार-शब्द है।

यह सुख चार दिनों का भाई। फिर दुख सदा होय दुखदाई।

ये ऐशो-इश्रते, शराब-कबाब और विषय-विकारों की लज्जतें चार दिनों की हैं। क्या कोई बुद्धिमान चार दिन की मौज मनाकर सदा के लिए दुखों में जाना मंजूर करेगा?

बार बार मैं कहूँ चिताई। दया तुम्हारी मोहिं सताई।।

सन्त कहते हैं कि हम आपको बार-बार उपदेश करते हैं कि आप विषय-विकारों से बचें, इसमें हमारा कोई मतलब नहीं छिपा हुआ लेकिन हमें आपके ऊपर दया आती है कि ये बेचारें भूले हुए जीव क्यों दुखी हुए फिरते हैं?

मेरे मन करुणा अस आई। चेतो तुम गुरु होयँ सहाई।।

आप कहते हैं कि मेरे दिल में विश्वास है आप 'नाम' की कमाई करें तो गुरु आपकी मदद करके आपको यहाँ से ले जा सकता है।

बिन गुरु और न पूजो कोई। दर्शन कर गुरु पद नित सेई।।

आप कहते हैं, ''गुरु के बिना और किसी की पूजा न करें। गुरु की पूजा में ही सबकी पूजा हो जाती है। जब आपको गुरु का दर्शन मिलता है तो आप उस पर बलिहार जाएं, खुश होएं। जब हम ब्रह्म में पहुँचकर असली दर्शन करते हैं तो हमें पता लगता है कि गुरु क्या ताकत है? अंदर जाकर ही महात्मा की ताकत का पता लगता है।''

महात्मा का तन जिस समय दुनिया में काम कर रहा होता है वह उस समय दूर-नजदीक अपने सेवकों की संभाल भी कर रहा होता है और अंदर भी अपने सेवकों को मालिक के दरबार में लेकर खड़ा होता है। महात्मा के अंदर और बाहर के स्वरूप में कोई फर्क नहीं होता। महात्मा का जो स्वरूप अंदर काम करता है बाहर के स्वरूप को भी उसका पूरा ज्ञान होता है।

गुरु की पूजा में सबकी पूजा। जस समुद्र सब नदी समाजा।।

आप कहते हैं कि सभी नदी नाले समुद्र में जाकर गिरते हैं। समुद्र से ही पानी भाप बनकर उड़ता है और नदी नाले बनकर समुद्र में ही जा पड़ता है। इसी तरह कुलमालिक परमात्मा महात्मा का तन धारण करके इस संसार में आता है। जिसने समुद्र में स्नान कर लिया उसने सब नदियों में स्नान कर लिया। जिसने गुरु को पूज लिया उसने सारे देवी-देवताओं को पूज लिया।

देवी देवा ईश महेशा। सूरज शेष और गौर गनेशा।।
ब्रह्म और पारब्रह्म सतनामा। तीन लोक और चौथा धामा।।

देवी-देवता, गौर-गणेश सभी गुरु के हुक्म में होते हैं। गुरु कुलमालिक का भेजा हुआ संसार में आता है। पल्टु साहब कहते हैं:

राम के घर में काम सब सन्ते करते।
तैंतीस करोड़ देवता सन्त से सब ही डरते।

जिस समय हिन्दुस्तान में ब्रिटिश सरकार का राज्य था उस समय राज्य चलाने के लिए विलायत से वायसराय आता था। उसी तरह सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे इस संसार में उस वायसराय की हस्ती के मुताबिक आते हैं वे परमात्मा के हुक्म में काम करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

साध रूप अपना तन धारया।

गुरु सेवा में सबकी सेवा। रंचक भर्म न मानो भेवा।।
ताते बार बार समझाऊँ। गुरु की भक्ति छिन छिन गाऊँ।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''इसमें भ्रम की कोई गुंजाईश नहीं कि जिसने गुरु की सेवा कर ली पूरा गुरु देख लिया उसने परमात्मा को देख लिया। मैं आपको बार-बार समझाता हूँ कि आप पूरे गुरु के पास जाएं। गुरु से 'नाम' लें 'नाम' की कमाई करें वापिस अपने घर सच्चखंड पहुँच जाएं।''

गुरुमुख होय गुरु आज्ञा बरते। गुरु बरती इक छिन में तरते।।
गुरु महिमा मैं कहाँ लग गाऊँ। गुरु समान कोइ और न पाऊँ।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''कोई महान आत्मा ही इस संसार में गुरु की आज्ञा का पालन करती है। जो गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं वे खुद तर जाते हैं और अपने संगी-साथियों को भी तार लेते हैं। मैं गुरु की महिमा कहाँ तक बयान करूँ! दुनिया में कोई सुनने के लिए तैयार ही नहीं इस पर चलना तो किसने है?''

गुरु अस्तुत है सब मत माहीं। गुरु से बेमुख ठौर न पाई।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप किसी भी मजहब, सभा या सोसाइटी में चले जाएं सब यही कहते हैं कि गुरु के बिना मुक्ति नहीं गुरु का होना जरूरी है।'' हिन्दुस्तान की आम कहावत है:

शाह बिना पत नहीं गुरु बिना गत नहीं।

कबीर साहब कहते हैं:

कबीर निगुरा न मिले पापी मिले हजार।
इक निगुरे की पीठ पर लख पापों का भार।

हिन्दु शास्त्रों में लिखा है कि निगुरे के हाथ का पानी शराब के तुल्य है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

गुरु मंत्रहीनस जो प्राणी दीर्घत जन्म भ्रष्टने।
कूकर सूकर गर्धव खल तुल्हे।

गुरु नानक साहब कहते हैं:

कहो नानक नेह जो ध्यावे बिन सतगुरु वाट न पावे।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

मत कोई भ्रम भूले संसार गुरु बिन कोई न उतरस पार।

भोग बिलास हुकूमत जग की। धन और हाकिम के बस रहती।।

आप कहते हैं, ''दुनिया की हुकूमत, धन-पदार्थ हाकिमों के बस में है। सिपाही धन-पदार्थ के लिए रात को सर्दी में तोपों के आगे पहरा देते हैं। वे उस धन को बेटे-बेटियों की शादी में लगाते हैं या उसे शराबों-कबाबों में खराब कर देते हैं।''

हाकिम सेवा तुम कस करते। धन और मान बड़ाई लेते।।
आज्ञा उसकी अस सिर धरते। खान पान निंद्रा भी तजते।।

अब कहते हैं कि हम हाकिमों की सेवा धन-पदार्थ या मान-बड़ाई के लिए करते हैं अगर हाकिम हुक्म दे दे उस समय भूख भी लगी हो तो हम यह नहीं कहते कि रोटी खानी है; नींद आती हो तो भी हम नहीं कहते कि हमने सोना है। हम हाकिमों के हुक्म के आगे

भूख, निद्रा और अपना सब तरह का ऐशो-आराम त्याग देते हैं अगर हम गुरु के हुक्म का सौंवा हिस्सा भी मानें तो कोई भी ताकत हमें सच्चखंड जाने से नहीं रोक सकती।

सो धन जोड़ किया क्या भाई। जगत लाज में दिया उड़ाई।।
सो जग की गति पहिले भाखी। चार दिनां फिर है नहिं बाकी।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि बहुत कष्ट उठाकर तोपों के आगे खड़े होकर जो धन इकट्ठा किया उसे लोकलाज में उड़ा दिया। यह चार दिनों की बल्ले-बल्ले है। पता नहीं हमने कहाँ चले जाना है! धन ने कहाँ चले जाना है!

सो धन कारण हाकिम सेवा। ऐसी करते क्या कहुं भेवा।।
गुरु सेवा जो सदा सहाई। ताको ऐसी पीठ दिखाई।।

बहुत कष्ट उठाकर हाकिमों की सेवा करते हैं लेकिन सतगुरु की सेवा सदा ही सहायक है। गुरु यहाँ भी मदद करता है आगे भी मदद करता है लेकिन हमने गुरु की तरफ पीठ की हुई है अगर भूल-चूक से कभी भजन में दो मिनट बैठ भी जाते हैं तो कहते हैं कि कमर दुखती है, घुटने दुखते हैं या हमारा ख्याल नहीं टिकता।

दिन नहिं पक्ष मास नहिं बरसा। कभी न दर्शन को मन तरसा।।

अगर खाली समय मिला तो सतसंग में चले गए लेकिन हमारे मन में एक महीने में छह महीने में या साल में भी गुरु के दर्शन करने की तड़प नहीं उठी; कभी भी तड़प से दर्शन नहीं किए।

कहो कैसे तुम्हारा उद्धारा। नर्क निवास दुक्ख चौ धारा।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप सोचकर देखें! किस तरह आपका उद्धार होगा? आपने जीते जी अपनी जिंदगी को नर्क बनाया

हुआ है। महात्मा ही आपको सही दवाई दे सकते हैं; महात्माओं के वचन नपे-तुले होते हैं।''

उस दुख में कहो कौन सहाई। गुरु से प्रीत न करी बनाई।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं जब मौत का फरिश्ता आकर छाती पर पैर रख लेगा तब दुख होगा। क्या उस समय माता, पुत्र या कौम हमारी मदद करेगी? गुरु के साथ प्रीत नहीं इसलिए तड़पता है; कभी काला होता है कभी पीला होता है।

जो इसकी परतीत न लाओ। तौ मन अपना यों समझाओ।।
रोग दुक्ख नित प्रती सताई। मौत पियादे हैं यह भाई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अगर आपको यह परतीत नहीं कि मौत, बीमारियां लोगों के लिए है; हमें मौत नहीं आएगी हमने जीवित रहना है। आपको जो रोग आते हैं, दुख लगते हैं ये उस मौत की चिट्ठियां हैं कि तैयार हो जाओ।''

मृत्यु होन में नहिं कुछ संसा। वह तो करे सकल जिव हिंसा।।
यह हिंसा तुम पर भी आवे। इक दिन काल सीस पर धावे।।

आप इस शक में न रहे मौत जरूर आएगी, यह वक्त टलता नहीं। यम हर जीव को लेने के लिए आते हैं। उनकी किसी के साथ दुश्मनी या प्यार नहीं जिसका जैसा-जैसा कर्म होता है वे वैसा-वैसा ही भुगतान करवाते हैं वे किसी को नहीं छोड़ते।

उस दिन का कुछ करो उपाई। धन हाकिम कुछ काम न आई।।

अब आप कहते हैं, ''जब काल आ जाता है उस वक्त कोई हाकिम और कमाकर रखा हुआ धन-दौलत आपकी मदद नहीं करता।''

पर जो समझवार तुम होते। तो धन से कुछ कारज लेते।।
कारज लेना यह है भाई। गुरु सेवा में खर्च कराई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अगर आप समझदार होते तो परमात्मा ने आपको जो धन-पदार्थ दिया है उस धन को गुरु की सेवा में खर्च कर देते; यही आपका अच्छा कार्य था।''

गुरु नहिं भूखा तेरे धन का। उन पै धन है भक्ति नाम का।।

गुरु किसी के धन का भूखा नहीं होता उसे परमात्मा ने भक्ति का बहुत धन दिया होता है। महात्मा चाहे दुकानदारी करे, खेती-बाड़ी करे वह अपना गुजारा अपनी कमाई से करता है लेकिन अपने सेवक का धन पवित्र करने के लिए सेवक के धन को लंगर में लगा देगा, कोई मकान बनवा देगा जो कुछ भी बनावाएगा संगत के लिए ही बनवाएगा। कबीर साहब कहते हैं:

पानी बाड़ो नाव में घर में बाड़ो दाम।
दोने हाथ उलीचिए यही सयानो काम।

पर तेरा उपकार करावें। भूखे प्यासे को दिलवावे।।

गुरु जानता है कि सेवक के धन को कहाँ लगाना है। वह सेवक के धन को भूखो में बाँट देता है और सेवक के धन को अच्छी तरफ ही लगाता है।

महाराज सावन सिंह जी अपने जीवन की घटना बताया करते थे कि हम पेशावर में बाबा कान्ह के पास जाया करते थे। हम उन्हें थोड़े बहुत पैसो का मत्था टेकते थे। एक बार हमें आर्मी में बहुत सारे रूपये मिले। बाबा कान्ह ने कहा, ''मैं सफेद-सफेद गोल-गोल बहुत सारे रूपये लूंगा।'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''बाबा! तू लालची हो गया है।'' बाबा कान्ह ने कहा कि मैं लालची नहीं हुआ। मैं चाहता हूँ कि तेरी कमाई पवित्र हो जाए। महाराज जी ने बहुत सारे रूपये बाबा कान्ह के आगे रख दिए। तभी वहाँ गरीब घर के छोटे-छोटे बच्चे आए वे बाबा कान्ह की जेब में से पैसे निकालकर ले गए।

सन्त-महात्मा हमारा धन पवित्र करने के लिए हमारे धन को साध-संगत में लगा देते हैं अगर सेवक का धन अच्छी तरफ साध-संगत में लग जाए तो सेवक कई बीमारियों से, मुकद्दमों से बच जाता है उसके कई कर्म कट जाते हैं।

उनकी मेहर मुफ्त तू पावे। जो उनको परसन्न करावे।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हम महात्मा की खुशी मुफ्त में ही प्राप्त कर लेते हैं।''

उनका खुश होना है भारी। सत्तपुरुष निज किरपा धारी।।
गुरु प्रसन्न होयँ जा ऊपर। वही जीव है सबके ऊपर।।

जिसके ऊपर गुरु खुश है वही सेवक सबसे ऊपर है। वह सेवक गुरु की खुशी हासिल करके सच्चखंड पहुँच जाता है।

गुरु राजी तो करता राजी। कर्म काल की चले न बाजी।।
गुर की आन सभी मिल मानें। शुकदेव नारद ब्यास बखाने।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं अगर गुरु राजी है तो भगवान राजी है। कर्म-काल उस सेवक का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। आप नारद के सूत्र और वेद-व्यास के पुराण पढ़कर देखें! सबने गुरु की महिमा गाई है; गुरु ही हमें इस संसार से निकाल सकता है।

ताते गुरु को लेव रिझाई। और न रीझे कुछ न भलाई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमारा पहला काम गुरु को खुश करना है अगर दुनिया न भी खुश हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं क्योंकि दुनिया आज तक न कभी किसी से खुश हुई है, न हो ही सकती है।''

गुरु प्रसन्न और सब रूठे। तो भी उसका रोम न टूटे।।

अगर गुरु प्रसन्न है चाहे सारी दुनिया रूठ जाए तो सेवक का कोई एक रोम भी नहीं उखाड़ सकता। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जाम गुरु होय वल ते लख बाँहें क्या कीजे।

अगर गुरु खुश है तो लाख बाहें भी कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

औरन को प्रसन्न जो करता। गुरु से द्रोह घात जो रखता।।
गुरु की निन्दा से नहिं डरता। गुरु को मानुष रूप समझता।।

आप कहते कि जो आदमी लोगों को खुश करता है लेकिन गुरु के साथ द्रोह रखता है। गुरु को इंसान समझता है। गुरु की निन्दा से नहीं डरता और ऐसे कर्म करता है जिससे उसके गुरु की निन्दा होती है तो हम कहते हैं: ***माड़ा कुत्ता खसमें गाली।***

अगर हम कोई बुरा कर्म करते हैं तो लोग यही कहेगें कि यह कैसे गुरु का शिष्य है, इसके गुरु ने इसे यह शिक्षा दी है?

सो नरकी जानो अपघाती। उस संग दूत करें उतपाती।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि वह नर्क में जाएगा। वह अपनी आत्मा का घात खुद कर रहा है। दूत उसके साथ उत्पात करते हैं।

याते समझो बूझो भाई। गुरु को प्रसन्न करो बनाई।।

आप कहते हैं कि सोच-समझकर गुरु को प्रसन्न करने की कोशिश करें, गुरु की आज्ञा पर चलने की कोशिश करें।

कुल कुटुम्ब कुछ काम न आई। और बिरादरी करे न सहाई।।
यह तो चार दिना के संगी। इन निज स्वारथ में बुधि रंगी।।
लज्जा डर इन का मत करो। गुरु भक्ति में अब चित धरो।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा बड़ा है। कुल, कुटुम्ब बिरादरी ये सब छोटे हैं आप इनसे मत डरें, इनकी शर्म न करें। **भक्ति** जरूर करें।''

गुरु सहायता यहाँ वहाँ करे। उनसे करता भी कुछ डरे।।
कुल कुटुम्ब से कुछ नहिं सरे। इनके संग नर्क में पड़े।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''गुरु इस दुनिया में और अंदर भी हमारी संभाल करता है। वह हर जगह हर कठिन घड़ी में हमारी सहायता करता है। कुल, कुटुम्ब और बिरादरी के साथ हम नर्कों में चले जाएंगे क्योंकि इन्होंने हमारी मदद नहीं करनी।''

ताते सतसंग सतगुरु सेवो। नाम पदारथ दम दम लेवो।।

कलयुग में मुक्ति के तीन साधन है-नाम, सतगुरु और सतसंग।

गुरु समान और नाम समाना। तीसर सतसंग और न जाना।।

सेवक को गुरु के बराबर, 'नाम' के बराबर और सतसंग के बराबर किसी कर्म को भी ज्यादा महानता नहीं देनी चाहिए; ये तीनों कायम कर लेने चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

कथा कीर्तन कल विखे भवसागर की नाव।
कहे कबीर जग तरन को नहीं और उपाव।

इनसे सब कारज होयँ पूरे। कर्म काट पहुंचो घर मूरे।

जो सतसंग और सतगुरु पर भरोसा रखते हैं 'नाम' को पूरे भरोसे के साथ सिमरते हैं गुरु उस सेवक के सब कामों में उसकी मुनासिब मदद करता है।

यह कहना मेरा अब मानो। नहीं अंत को पड़े पछतानो।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि अब मेरा कहना मानें नहीं तो आखिरी समय में आपको पछताना पड़ेगा कि हमें किसी फकीर ने समझाया था लेकिन हमने उस समय अमल नहीं किया।

धन और मान काम नहिं आवे। हुकुम हाकिमी सभी नसावे।।
ता ते कुछ भक्ति कर लीजे। यह भी सुफल कमाई कीजे।।

अब आप कहते हैं, ''जब अन्त समय आता है तब धन, हुकूमत कोई भी हमारा साथ नहीं देता। इस जन्म में गुरु **भक्ति** करके अपने जीवन को सफल बना लें।''

इस शब्द में स्वामी जी महाराज ने समझाया है कि हमें इंसान का जामा एक हीरा मिला है। हमने इस जामें में बैठकर गुरु **भक्ति** करनी है। गुरु **भक्ति** का यह फल मिलता है कि हम परमात्मा से जाकर मिल जाते हैं, गुरु ही हमें इस संसार से निकाल सकता है।

❂❂❂

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

दुनिया में हर कोई अपनी जगह कुछ न कुछ माँगता है लेकिन प्रेमी प्रीतम से केवल प्रीतम को ही माँगता है। शेख शादी साहब फरमाते हैं, ''लोग कहते हैं कि तू प्रीतम से कुछ माँग? लेकिन मैं प्रीतम से प्रीतम को ही माँगूगा।'' मुरीद अपने मुर्शिद की रजा के आगे इस तरह सिर झुका देते हैं जिस तरह मुर्दा स्नान करवाने वाले के आगे मिट्टी की ढेरी की तरह रहता है। इस अवस्था में जीव ऊँची दौलत का भागी बन जाता है।

भाई गुरदास जी फरमाते हैं, ''बातों से मुरीद नहीं बन सकता। मुरीद को मुर्दा बनकर ही रहना चाहिए। मुर्शिद जो चाहे सो करे मुरीद उसमें कोई रूकावट न डाले।''

मुर्दा होय मुरीद न गल्ली होवणां।
सब्र सिदक शहीद भ्रम भौ भोगणां।

जब तक हमारी तवज्जों दुनिया की ख्वाहिशों की तरफ से नहीं हटती और हम बुद्धि की हद से ऊपर नहीं उठते तब तक प्रीतम के दर्शन नहीं कर सकते। **प्रेम** सब हदों से परे है, वहाँ मन-बुद्धि की मैलों से रहित होकर ही जाना पड़ता है। जब प्रेमी उस मस्ती में अपने आपको भूल जाता है तो प्रीतम की प्यारी सूरत नजर आती है। उसे हर तरफ प्रीतम का दीदार होता है, प्रीतम की आज्ञा मीठी लगती है।

मीठी आज्ञा पिर की लागी सोकन घर की कंत त्यागी।

प्रीतम की रजा प्रेमी को रस देने वाली होती है। **प्रेम** का जज्बा कुफ्र और ईमान, बदी और नेकी सबसे दूर ऐसी अवस्था में पहुँचा

देता है जो लफ्जों में बयान नहीं हो सकता। वह उस आलौकिक रसभरी कशिश में मस्त हो जाता है; जिसमें मैं-तू, हिजर और बशल के ख्याल गुम हो जाते हैं। वह **प्रेम** रूप बन जाता है।

सच्चा **प्रेम** वह नहीं जो अपना दिल चाहे सो करे! प्रीतम की मर्जी पर चलना ही सच्चा प्रेम है। प्रेमी अपनी तकलीफ या आराम का ध्यान न रखे हर हाल में अपने प्रीतम के आराम के लिए अपनी खुदी को वारता रहे। इसमें प्रेमी को जो तकलीफें आती हैं उसी में उसे सच्चा आनन्द प्राप्त होता है; जो दुनिया के लोगों को स्वपन में भी नहीं आ सकता। इसका मतलब यह नहीं कि प्रेमी को ही तकलीफें होती हैं, प्रीतम को अपने प्रेमियों के लिए उनसे ज्यादा दुख उठाने पड़ते हैं। भँवरा तो एक बार जलकर सब तकलीफों से छूट जाता है लेकिन लाट हमेशा जलती रहती है।

प्रेम में अपनी खुदी का त्याग करना पड़ता है, खुदी मिटने पर ही असली प्रेम की शक्ल नजर आती है। प्रेम के अंदर चाहे बाहर से तकलीफें नजर आती हैं लेकिन प्रेमी के अंदर जो आनन्द होता है उसे और कोई नहीं जान सकता।

सच्चा **प्रेम -** जहर को अमृत, आग को शीतल, साँपों को फूलों का हार, दुख को सुख, बदनामी को नेकनामी बना देता है। जिस्म की खाल को कपड़ो की तरह उतार देना, सूली पर हँसते-हँसते चढ़ जाना, प्रेम में मर जाना और जान दे देना एक खेल तमाशा है जो खुशी और सुख का जरिया समझा जाता है। इस **प्रेम** में जी उठने में आलौकिक आनन्द है, उसका अंदाजा कौन लगा सकता है?

कबीर जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द।
मरने ही ते पाइए पूर्ण परमानन्द।

प्रेम सब कुछ अर्पण कर देने का मार्ग है। यह बनिए की दुकान नहीं यहाँ तो जिस्म-जान और ईमान सब कुछ कुर्बान करने पड़ते हैं।

प्रेम में कुछ लेने का सवाल नहीं इसमें तो देना ही देना है। तन दे दो! मन दे दो! जान दे दो! ईमान दे दो तो ही प्रेम की गली में जाने की खुशी मिलती है।

शर्मद साहब फरमाते हैं, ''हमने तन दे दिया है जान दे दी है और ईमान भी दे दिया है; दुनिया इन झंझटो में फँसी हुई है।'' गुरु साहब फरमाते हैं कि इस रास्ते पर खुशी-खुशी सिर कटा लें पर दर्शनों तक की आशा न रखें।

मन तन धन आगे राख्या सिर वेचा गुरु आगे जाए।

खुसरो साहब फरमाते हैं, ''ऐ दिल! तू खुश हो, तुझे कल **प्रेम** के बाजार में कत्ल किया जाएगा लेकिन इस बात का कोई इकरार नहीं कि तेरा प्रीतम तुझे दीदार देगा। जहाँ प्रेम है वहाँ खुदगर्जी नहीं रह सकती, ये दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते। जिसका जामा प्रेम में फट गया वह सब ऐबों से पाक हो जाता है।'' कबीर साहब कहते हैंः

प्रेम न वाड़ी उपजे प्रेम न हाट बिकाए।
राजा राणा जो रचे शीश दिए ले जाए।

प्रेम खेतों में नहीं उगता, दुकान पर नहीं बिकता। यहाँ अमीर और गरीब सब एक हैं; जो सीस दे वही ले जाए। प्रेम के रास्ते पर अपने आपको मारना पड़ता है, मान-बड़ाई छोड़नी पड़ती है तभी हम प्रीतम को पा सकते हैं।

मौलाना रूम साहब फरमाते हैं, ''जब तक इंसान अपने आपको मार नहीं लेता तब तक वह मालिक के दरबार में रसाई नहीं पाता। मौहब्बत के मदरसे में अलिफ-बे तब शुरू होती है जब आप अपने आपसे दूर हो जाएं। इस तरफ जाने की श्री गणेश वही समझ सकता है जो **प्रेम** में उल्टा पड़ा है। मौहब्बत की राह पर जाने वाले को हमारा संदेश दे दो कि इस रास्ते में अपने आपसे दूर होकर ही मंजिल की तरफ कदम उठाया जा सकता है।''

प्रेम करना नाजुकों का नहीं बहादुरों का काम है। इस रास्ते पर प्रेमी को सिर देना पड़ता है। प्रेम अमृत का एक सुहावना चश्मा है जिसमें एक बार डुबकी लगाने से इंसान अमर जीवन को पा लेता है।

दुनिया में कहने के लिए तो सब **प्रेम** के बारे में कुछ न कुछ जानते हैं हर कोई ही इसका चाहवान नजर आता है। प्रेम का मार्ग कठिन है यह लाड और नियामतों में पले हुओं का काम नहीं। यह तो सिरफिरो का काम है जो प्रेम के रास्ते पर चलना चाहते हैं, वे पहले सिर को तली पर रखकर कदम उठाएं।

हाफिज साहब फरमाते हैं कि प्रीतम की गली में जाना आराम तलबी का काम नहीं। आशिकी का पेशा अख्तियार करना मुसीबतों को झेलने वाले मस्त फकीर व बेपरवाह निहंगों का काम है। ईश्क करना नाजुक दिलवालों का काम नहीं यह तो पहलवानों का काम है।

प्रेम में कदम रखना ऐरे-गेरे नत्थूखेरे का काम नहीं यह निडर और जान देने वालों का काम है। प्रेम की राह पर चलना डरपोको का काम नहीं। प्रेम के बादशाह का हाथ बहुत बड़ा है उस तक पहुँचना नाकारों का काम नहीं। हम जब तक प्रीतम को सिर की भेंट नहीं चढ़ाते तब तक प्रेम को नहीं पा सकते।

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''**प्रेम** की शर्त कम से कम सिर का देना है अगर तू यह नहीं कर सकता तो चला जा प्रेम का नाम न ले।'' कबीर साहब कहते हैंः

प्रेम प्याला जो पिए शीश दक्षिणा दे।
लोभी शीश न दे सके नाम प्रेम का ले।

प्रेम का प्याला वही पी सकता है जो अपने सिर की दक्षिणा दे। यह काम लोभी आदमी का नहीं क्योंकि जो शीश नहीं दे सकता वह ऊपर से ही प्रेम का नाम लेता है।

प्रेम कोई आसान काम नहीं। जो सिर को उतारकर भूमि पर रख दे! वही प्रेम के घर में दाखिल हो सकता है। सिर को भूमि पर रखकर उस पर पैर रखो अगर ऐसा कर सको तो इस रास्ते पर आओ; ऐसा करके **प्रेम** के स्वाद को चख सकोगे। यह रास्ता अगम और अगाह का मार्ग है अर्थात जब रूह सिमटकर आँखों के पीछे शीश पर आए तभी प्रेम की गली में प्रवेश होता है और उसके आलौकिक रस को चखा जाता है। कबीर साहब कहते हैं:

यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहें।
सीस उतारे भुए धरे तब पैठे घर माहें।
सीस उतारे भुए धरे ऊपर रखे पांव।
दास कबीरा यों कहे ऐसा होय तो आओ।
ये तो घर है प्रेम का मार्ग अगम अगाध।
सीस काट पग तल धरे तब निकट प्रेम का स्वाद।

महात्मा नागरीदास जी भी यही फरमाते हैं जो सिर को काटकर आगे रखे वह इस तरफ कदम उठाएं! अगर ऐसा है तो ईश्क के चमन में आने का ख्याल करे।

सीस काट आगे धरे ता पद राखे पाँव।
ईश्क चमन के बीच में ऐसा होए ता आओ।

इस रास्ते में जान देनी पड़ती है। ऐ दिल! क्या अच्छा हो कि तू अपनी जान प्रीतम के हवाले कर दे नहीं तो एक दिन मौत तेरी जान जरूर ले लेगी। अब तू अपने आप ही इंसाफ कर! क्या अच्छा है?

प्रेम कुर्बानी जानता है। सब ख्वाहिशों को त्याग दे, सब दावों को छोड़ दे; किसी का मुफ्त में लाला गोला बनने का नाम **प्रेम** है। अपने आपको प्रेम में मिटा देना सच्ची जिंदगी को पाना है। प्रीतम के अंदर जाग उठना मालिक में समा जाना है; यह काम कुर्बानी का है।

शेष अगले अंक में........